



विक्रय पत्र
=====

2/21/96

①

- 1= स्टाम्प शुल्क 2725/-रुपये आवास विकास शुल्क सहित कुल योग 2725/-रु
- 2= किसम अस्ताविज= विक्रय पत्र 1=
- 3= विक्रीत मुल्य 25,000/-रुपये बाजारी मुल्य 18,000/-रु=
- 4= विक्रीत संपत्ति का क्षेत्रफल 254-1। कगिज =
- 5= विक्रीत संपत्ति औद्योगिक बस्ती के अन्तर्गत नहीं है।
- 6= विक्रीत संपत्ति आबादी में है।=
- 7= विक्रीत संपत्ति पर सीलिंग अधिनियम लागू नहीं होता है।=
- 8= विक्रेता व क्रेता किसी अनुसूचित व अनुसूचित जनजाति से नहीं है।=
- 9= यदि पूर्ण संपत्ति किराये पर दी जाये तो 60/-रु प्रतिमाह से अधिक किराये पर नहीं चढ़ सकती संपत्ति 60-70 वर्ष पूर्व पुरानी निर्मित है।=
- 10= विक्रीत संपत्ति का वार्षिक मुल्यांकन 720/-रु जिसका 25 गुना करने पर 18,000/-रु होता है परन्तु स्टाम्प शुल्क 25,000/-रु पर अदा किया जा रहा है।

30/1

मैं कि योगेश कुमार उर्फ मुल चंद पुत्र स्व० श्री शंकर लाल निवसी गढरोड निकट बिहारी आश्रम हापुड का हूँ।=== विक्रेता

विदित हो कि विक्रीत संपत्ति जिसका पूर्ण विवरण इस विक्रय पत्र के अंत में दिया गया है श्री बाबु राम चरण दास की संयुक्त संपत्ति थी। उन्होंने अपने पीछे तीन पुत्र श्री रघुवीर शरण, श्री शंकरलाल व श्री तुलसी राम छोड़े। श्री बाबु राम, चरण दास के मृत्यु के बाद

योगेश कुमार



=2=

2/19/52

30/11/52

एक वाद बाबत बंटवारा श्री शंकर लाल, वारा सिवल जज दिवतीय मीठ प्रस्तुत किया गया उपरोक्त वाद 20 सन् 1947 था। और उक्त वाद में श्री शंकर लाल को कुल जायदाद मुश्तका का एक बटा तीन हिस्सा मिला और इस प्रकार श्री शंकर लाल विक्रीत संपत्ति के एक मात्र स्वामी व अधिकारी हुए और वह उक्त संपत्ति के तनहा स्वामी, थे।

विदित हो कि श्री शंकर लाल का देहान्त वर्ष लगभग 1952 के बाद में हुआ उन्होंने अपने पीछे अपनी देवा श्रीमती नारायणी देवी छोड़ी इसके अलावा मुश्तका की श्री शंकर लाल ने अपनी जिन्दगी में मुझे अपना दस्तक पुत्र मानकर बतौर पुत्र मेरा पालन-पोषण किया और मैं उनके पास बतौर पुत्र की हैसियत से रहता रहा। ताजिन्दगी उनके साथ बतौर पुत्र रहा।

विदित हो कि उपरोक्त श्री शंकर लाल मुश्तका ने एक वसीयत दि० 21-11-51 अंकित की उक्त वसीयत में ताजिन्दगी अपनी सन्त जायदाद के वह स्वयं मालिक रहे उनके बाद उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नारायणी देवी व उनके बाद मुश्तका की संपत्ति के बेचने व हस्तान्तरण करने के अधिकार प्राप्त हुए। मेरी माता श्रीमती नारायणी देवी का देहान्त आज से लगभग 4 वर्ष पूर्व हुआ और अपने पिता व माता के देहान्त के बाद मैं विक्रीता उनका एक मात्र वारिस व उत्तराधिकारी हूँ। और वसीयत =

श्री शंकर लाल मुश्तका

=3



=3=

2/2/15

3/2/15

दिनांक 21-11-51 अनुसार मुझ विक्रेता की विक्रीत संपत्ति बेचने तथा हस्तांतरण करने के पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं मैं विक्रेता संपत्ति का पिछले लगभग 30 वर्षों से किराया वसूल करके किराये की रसीद जारी कर रहा हूँ विक्रीत संपत्ति में मेरे अलावा कोई भागीदार व साझेदार नहीं है अर्थात् मैं विक्रेता संपत्ति का एक मात्र स्वामी अधिकारी व आधिपत्य में हूँ। विक्रीत संपत्ति हर प्रकार के भार आदि से मुक्त है अर्थात् संपत्ति कहीं रहन बिय कर्क व जेर जमानत व कर्जा बैंक व सोसायटी नहीं है अर्थात् संपत्ति बेपाक व साफ है। मुझ विक्रेता को संपत्ति से इतना लाभ नहीं हो पा रहा है जितना होना चाहिये इसके अलावा संपत्ति की कीमत भी अच्छी प्राप्त हो रही है विक्रेता की माता श्रीमती नारायणी देवी का नाम नगरपालिका ऋषिगिरि में बतौर स्वामी अंकित है और मैं विक्रेता ही संपत्ति के समस्त कर आदि अदा कर रहा हूँ मेरे अलावा संपत्ति में मेरा कोई साझेदार व भागीदार नहीं है अर्थात् मैं अकेला ही संपत्ति का तनहा स्वामी हूँ।

अतः मुझ विक्रेता उपरोक्त श्री योगेन्द्र कुमार उर्फ मुलचंद -पुत्र स्व0 श्री शंकर लाल नि0गढरोड हापुड ने अपनी खेळा, खद्य मस्तिष्क व इन्द्रियों की दशा में बिना किसी के बहकावे बिना दबाव अपनी पूर्ण संपत्ति जिसका विवरण इस विक्रय पत्र के अंत में दिया गया है बदस्तूर विक्रेता महोदय श्री कृष्ण चंद ग्रीवर पुत्र श्री मथुरा प्रसाद ग्रीवर नि088 हरिद्वार रोड

योगेन्द्र कुमार उर्फ मुलचंद

=4



=4=

2/19/20

30/8/20

अधिकांश जिला देहरादून को मु० 25,000/- पच्चीस हजार रुपये में कतई विक्रय कर दी है और विक्रीत मुल्य मु० 25,000/- को इस विक्रय पत्र को अंकित व पंजीकृत करते समय नकद सब रजिस्ट्रार महोदय देहरादून के समक्ष नकद वसूल पा लिये हैं और अब विक्रीत मुल्य में कुछ भी लेना शेष नहीं है यदि मैं इसका ख़ाचन करूँ तो निरर्थक होगा संपत्ति का मालकाना कब्जा मुझ विक्रीता ने क्रेता का करा दिया है जो अधिकार मुझ विक्रीता को प्राप्त थे अथवा प्राप्त होने संभव थे उन सबके अधिकारी आज से क्रेता महोदय हो गये हैं मेरा कभी परिवार के किसी सदस्य का कोई ताल्लुक आज से विक्रीत संपत्ति से नहीं रहा । आज तक के समस्त कर जो भी होंगे उन सबको अदा करने की जिम्मेदारी मुझ विक्रीता की है व आज के बाद समस्त कर आदि क्रेता महोदय अदा करेंगे मुझ विक्रीता ने क्रेता महोदय को अपने समान विक्रीत संपत्ति पर आरुढ़ करा दिया है । क्रेता को अधिकार होगा कि विक्रीत संपत्ति को जिस प्रकार चाहे उपयोग व उपभोग में ला सकते हैं उन्हें -

अधिकार होगा कि किरायेदारों से किराया वसूल करें अर्थात् आज से किरायेदार श्री कृष्ण चंद्र ग्रीवर के किरायेदार हो गये हैं । यदि भविष्य में मुझ विक्रीता की किसी कमी अथवा दोष के कारण अथवा कोई भार आदि पाये जाने के कारण अथवा किसी व्यक्ति के उत्पन्न होकर अपना अधिकार सिद्ध करने के कारण अथवा किसी अन्य कारण विक्रीत संपत्ति अथवा उसका

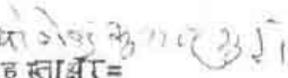
पंजीकृत कर 23/5

कोई भाग ड्रेता महोदय के अधिकार व कब्जे से निकल जाये तो ड्रेता की अधिकार होगा कि निकली गयी संपत्ति, बीमत बढोतरी तथा हर्जा सहित मुझ विद्रेता से जिस प्रकार चहे वसुल कर सकते हैं मुझे व मेरे परिवार के सदस्यों को कोई आपत्ति किसी प्रकार की नहीं होगी। विद्रीत संपत्ति समस्त हवा पानी रोशनी व सुआधिकार सहित मय फिटिंग चालु सहित विक्रय की गई है। यह स्पष्ट किया जाता है कि नकशे में दर्शित दीवार ए0बी0 ड्रेता श्री कृष्ण चंद ग्रीवर व श्री अमर नाथ की संयुक्त दीवार होगी इसके अलावा विद्रीत संपत्ति के ऊपर की मंजिल में एक कमरा, ~~एक कमरा~~ रसोई श्री कृष्ण देव की किरायेदारी में है और ड्रेता को अधिकार है कि उनसे किराया वसुल करें उसका कब्जा मालकाना ड्रेता महोदय को दे दिया है ड्रेता महोदय को यह भी अधिकार होगा कि जो बकाया किराया किरायेदारों की ओर है उसे वसुल कर सकते हैं अर्थात् किराया भी इस विक्रय पत्र विक्रय किया गया है ऊपर की मंजिल में एक कोठरी बाली है जो विद्रेता के अध्यासन में है जिसका बाली वास्तविक कब्जा आज मेरे पर दे दिया। जहाँ जहाँ शब्द विद्रेता व ड्रेता आयि हैं वहाँ वहाँ उनके उत्तराधिकारी, धानापन्न व प्रतिनिधि आदि का समावेश समझा जायेगा। =

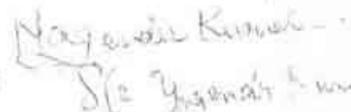
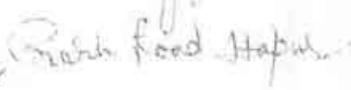
विवरण संपत्ति
=====

संपत्ति नं0 88 हरिद्वार रोड ~~विक्रि~~ जि0 देहरादून जो साथ में संलग्न नकशे में लाल रंग से व अंग्रेजी के शब्द ए0बी0सी0डी0 से चिह्नित है व जिसकी सीमायें इस प्रकार हैं :-
 उत्तर में= 3 फुट चौड़ी संयुक्त नाली व बाद में संपत्ति श्री माधो राम बत्री=
 दक्षिण में= संपत्ति श्री राज कौशल्या व सतीश कुमार आदि=
 पूर्व में= हरिद्वार बट्टीनाथ रोड =
 पश्चिम में= संपत्ति श्री अमर नाथ ग्रीवर जो आज विद्रेता ने विक्रय की।

अतः यह विक्रय पत्र लिख लिया ताकि सनद रहे और वक्त जफ़्त पर काम आवे इति लिखित दिनांक 9=6=1981 ई0 ध्यान देहरादून।

हस्ताक्षर=


साक्षी= श्री 21/10 य (21/10/81)
 216 215 2155

साक्षी=

 - साक्षी=


रचयिता= श्री एस0के0 गोयल / एडवोकेट देहरादून।
 टाईपकर्ता= अजय कुमार कर्णवाल, देहरादून